International Journal of HumanitiesAnd Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 10-09-2024,Accepted: 11-10-2024, Published: 26-10-2024
Volume 10, Issue 5, 2024, Page No. 39-42

समणसन्त सेवालाल के जीवन दर्शन का बंजारा महिलाओं में शैक्षणिक प्रभाव

मुकेश राठौर, डॉ0 शीतल झा
सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंधन अध्ययन शाला, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, डॉ. अम्बेडकर नगर, महू, इन्दौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
इस प्रस्तुत आलेख के अध्ययन में बंजारा इतिहास में संपूर्ण वर्णन समण संस्कृति का इतिहास मिलता है। जिस समण संस्कृति की परंपरा में अनेक संत हुये है। समण सन्त सेवालाल इसी परंपरा के परावर्तक रहें है। उनका जीवन दर्शन बंजारा इतिहास में केन्द्रित है। उनके सिद्धांत उनका जीवन दर्शन से बंजारा समुदाय में ज्ञान का प्रकाश की नई रोशनी डाली है। उनकी शिक्षाओं का प्रभाव बंजारा समुदाय की महिलाओं में आज भी परंपरा रीति रिवाज की रूढ़ी चलन में देखने को मिलता है। इससे कह सकते है कि समण संत का जीवन दर्शन महिलाओं के सशक्तीकरण बनाने में उनकी शिक्षाओं का शैक्षणिक प्रभाव का नतीजा है कि शिक्षा की ओर कदम बढ़ा रही है। जो समुदाय घुमंतु खानाबदोस में जीवनयापन करते थे वे अब समण के रास्ते पर चलकर महासमण महापुरिष डॉ अम्बेडकर जैसे बोधिसत्व व महासमण तथागत बुद्ध के जीवन को प्रेरणा मानकर अपने जीवन में परिवर्तन लाया है। आलेख के विश्लेषणात्मक अध्ययन में समण संत सेवालाल के जीवन दर्शन का प्रभाव है कि बंजारा महिलाओं में समाजिक शैक्षणिक उत्थान हुआ है। इसका परिणामस्वरूप है कि अब उनकी प्रमुख पहचान घुमंतु बंजारा जनजाति के रूप में राजस्थान, उत्तर–पश्चिमी से लेकर गुजरात, पश्चिमी मध्य प्रदेश और आज़ादी से पहले पाकिस्तान का पूर्वी सिंध प्रांत तक फैला था वह बंजारा समुदाय अपनी पहचान के साथ विश्वपटल में खड़ा हो चुका है। उनका दावा है कि हमारा व्यवसाय पूरे दुनिया में फैला था जिनके बारे में अग्निवंशीराजपूतों के वंश से संबंधित हैं माना जाता है। इन्हे विभिन्न नामों विभिन्न पहचानों से बुलाते है जैसे बंजारी, लमाड़ी, लम्बानी, लभानी, के नाम से भी जाना जाता है। लम्बारा, टांडा, वंजारी, वंजारा और वानजी। डोम्बा के साथ, उन्हें कभी–कभी भारत की जिप्सी भी कहा जाता है। उनकी सांस्कृतिक परंपरा में महिलाएं फेटवा और कांचली जैसी रंगीन और सुंदर पोशाकें पहनने के लिए जानी जाती हैं हाथों पर मेहंदी और टैटू बनवाती हैं। इसके साथ साथ पश्चिमी संस्कृतियों में पोशाक को फैंसी और आकर्षक मानतें है। यह परिवर्तन आधुनिक शिक्षा से जोड़ने में समण सन्त सेवालाल की परांपरिक शिक्षा की अहम भूमिका मानी जाती है।

मूलशब्दः महासमण बुद्ध, समणसन्त सेवालाल, भारतीय जीवन दर्शन, बंजारा महिला, अम्बेडकर के शिक्षा का प्रभाव

समणों के महाभारत में अनेक सन्तों के जीवन दर्शन का उल्लेख मिलता है सुखा संघस्स सामग्गी, समग्गानं तपो सुखो अर्थात सन्तों के संघ की एकता सुखदाई है तथा एकतायुक्त होकर किया गया कार्य अथवा धर्म साधना सुखदाई होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि समणसंघ' जिस जुड़ने एवं जोड़ने के कंसेप्ट को लेकर चल रहा है, वह आज का नहीं है बल्कि यह भगवान तथागत सम्यक सम्बुद्ध से भी पहले से है। भगवान बुद्ध ने भी संघ में रहने की बात कही। 'संघं सरणं गच्छामि। भगवान बुद्ध की इस बात को भिक्षुओं ने माना, स्वीकार किया। संघ बने। वह आज भी संघ में है। लेकिन भिक्खुओं के अनेकों संगठन दिखाई पड़ते हैं, उनमें भी एकता दिखाई नहीं पड़ती है।इस समय भिक्षुओं को भी एक साथ संघ में रहने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। उपासकों में संघ में रहने की अवधारणा सम्राट अशोक के समय तक रही। जब तक हम संघ में रहे,हमारी एकता रही, हम बलशाली रहे, समृद्धिशाली रहे, जमीन जायदाद रही। धनसम्पत्ति रही,हम हर तरह से खुशहाल रहे। यहां तक कि हमारा देश सोने की चिड़िया कहलाया। लेकिन बाद में संघ में रहने की अवधारणा धीरे धीरे समाप्त होती चली गई और हम कमजोर होते चले गए। असहाय होते चले गए और दरिद्र हो गए। हमारी जमीनें चली गई, धनसम्पत्ति, हमारी शिक्षा चली गई, हमारा समाज बिखर गया और हम सब कमजोर, असहाय और दरिद्र हो गए और ऐसी जिंदगी हमने हजारों साल जी है। बल्कि आज भी गांवों देहात एवं मलिन बस्तियों में ऐसी ही जिंदगी जी जा रही है। परंतु कालांतर में एक मसीहा, महामानव बोधिसत्व बाबा साहेब डा अम्बेडकर ने जन्म लिया और उन्होंने हम सब के कल्याण के लिए एक संघीय ढांचायुक्त संविधान दिया। जिससे देश आगे बढ़ा,हम आगे बढे, हमारा समाज आगे बढ़ा,हम खुशहाल हुए। हम शिक्षित होने लगे,खोई हुई सम्पत्ति, जमीन –जायदाद वापस आने लगी,अच्छे–अच्छे मकान बनने लगे, बच्चे पढ लिखकर अच्छी–अच्छी नौकरियां करने लगे, हम छोटे–मोटे उद्योग धन्धें लगाने लगे, हम गौरवान्वित महसूस करने लगे, प्रदेश और देश के सर्वोच्च पदों पर पहुंचने लगे लेकिन साथ ही हम अपने पुराने दुश्मन से बेपरवाह हो गए, असावधान हो गए। वह हमारा पुराना दुश्मन लगातार शांत नहीं रहा। हमारी प्रगति को रोकने के लिए नये नये तरीके ढूंढता रहा,नई–नई चालें चलता रहा, जिससे वह अपनी पुरानी मनुवादी व्यवस्था को लागू कर सके, पूंजीवादी व्यवस्था आ सके। लेकिन बाबा साहेब द्वारा बनाया गया संघीय ढांचायुक्त संविधान हमारी सुरक्षा कवच बनकर सामने खड़ा रहा। लेकिन हमारा दुश्मन बहुत ही शातिर दिमाग का है उसने हमारे सुरक्षा कवच को ही निशाने पर ले लिया है।नये नये संविधान संशोधनों एवं कानूनों के द्वारा संविधान को कमजोर किया जा रहा है। यहां तक कि संविधान को ही समाप्त करने की बातें होने लगी है। लेकिन हम सब अब भी अचेत है। अपने अधिकारों के प्रति सजग एवं जागरूक नहीं है। क्योंकि अपने समण सन्तों महापुरूस के बताये मारग पे नहीं चलते ठीक हमारे समण सन्त सेवालाल की शिक्षा यही है सेवालाल को कोई सेवाराम बोलते है तो कोई सेवा सेवा जोहार बोलते है पर व्यवहारिक जीवन में उनके जीवन दर्शन को उतारने की आवश्यकता है। जिसने बंजारा समुदाय की मुक्ति का मार्ग खोला है।

बंजारा समण संस्कृति का इतिहास

बंजारा समुदाय की समण संस्कृति प्रकृति केन्द्रित है। बंजारा अपने टांडा में सभी के साथ समान व्यवहार करते है। अपने कुल कुटुम्ब कबीला में सुखी सुराक्षित रहते थे। उनके तबाले टांडा में पशुओं का बड़ा महत्व था तो वह व्यापार केन्द्रित था। बंजारा समुदाय में एक प्रचलित लोकाक्ति है कि राजा फूल सिंह नेणावत के पास एक बहुत तेज दौड़ने वाला घोड़ा था। उस पर बैठकर वह हिमालय की ओर चला गया वहां वह ठंड से अकड़कर गिर गया और बेहोश हो गया। पास में पशु चराने वाली ग्वाली ने

देखा तो अपनी गोद में उसका सिर रखकर कपड़ा उढ़ा दिया इससे ठंड दूर हो गई और उसे होश आ गया। अंत में उस लड़की ने उससे शादी कर ली और वह लेकर अपने गांव चली गई और समुद्र के रास्ते के किनारे से लड़की के गर्भ से लाखा का जन्म हुआ। यह कहानी कोई और नहीं बुद्ध की ओर अंगित करती है। जो हिमालय के लुम्बनी नदी के परौणिक कथाओं से जोड़ती है। इस लाखा फुलाड़ी कहलाया इसके परिणाम इस तरह मिलते है कि

लाखा पूत समंद का, फूला घर अवतार।
जिण दिन लाखो जन्मियों, बाजे कंचन थार।
लाखो जन्म्यो तब चार जन्म्या, खुलज्ञा अलख भंडार।
रली, गली में बधावणा, मोती बरसण हार।

इस तरह बंजार वश वृक्ष की परौणिक कथांऐ प्रचलित है। जिनमें लाखा फुलाड़ी सेवा भाया, लबाणा लभाना बाबा लक्खी शाह मक्खी शाह पिझोला, पिछोला समण संत लाला हरिदास खालसा पंथ आदि सब समण संत सेवालाल महाराज की वंशावली में शामिल है।

समण सन्त सेवालाल का जीवन दर्शन

समणसंत सेवालाल महाराज (15 फरवरी 1739–4 दिसंबर 1806) एक भारतीय सामाजिक–धार्मिक सुधारक और सामुदायिक नेता थे, और गोर बंजारा समुदाय द्वारा उन्हें आध्यात्मिक गुरु के रूप में सम्मानित किया जाता है। गुरु सेवालाल महाराज का जन्म 18वीं शताब्दी में भीमा नाइक (पिता) और धरमनी याड़ी (मां) से हुआ था। उनकी मृत्यु रूहीगढ़ (यवतमाल जिला) में हुई और उन्हें वाशिम जिले के पोहारागढ़ में दफनाया गया, जो अब महाराष्ट्र राज्य में है। उनकी समाधि अभी भी वहां देवी जगदम्बा को समर्पित एक मंदिर के बगल में स्थित है। हालाँकि वह व्यक्तित्व पंथ और रीति–रिवाजों के विरोधी थे, लेकिन यह बंजारों के लिए एक लोकप्रिय गंतव्य है। सेवालाल और जगदम्बा को समर्पित इसी तरह के निकटवर्ती मंदिर अन्यत्र भी मौजूद हैं और बड़ी संख्या में उपासकों को आकर्षित करते हैं। सेवालाल की प्रशंसा करने वाले लोक गीत हैं जो बंजारा उत्सव के दौरान लोकप्रिय हैं। प्रत्येक बंजारा/गोर/लंबाडी गांव या टोले में श्री सेवालाल गुरु का एक मंदिर है। सभी बंजारे आध्यात्मिक श्रद्धा की गहरी भावना दिखाने और सामुदायिक गरिमा की गहरी भावना का दावा करने के लिए प्रत्येक गाँव में आध्यात्मिक स्थलों पर भगवा रंग के झंडे फहराते हैं।

बंजारा समण सन्त का शिक्षा दर्शन

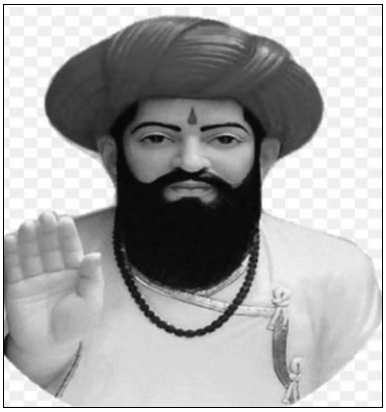

1. समुदाय की उसी तरह सेवा करें जैसे आप अपने परिवार की करते हैं।
2. किसी के साथ किसी भी आधार पर भेदभाव न करें।
3. प्रकृति की पूजा करें और प्रकृति से विमुख न हों।
4. पेड़ लगाओ और पेड़ों और जानवरों की रक्षा करो। जानवरों को कसाईयों को न बेचें।
5. महिलाओं का सम्मान करें.
6. लड़कियों/बेटियों को देवी मानना चाहिए।
7. हिंसा न करें.
8. अपनी जान की कीमत पर भी झूठ मत बोलो; दूसरों के बारे में बुरा मत बोलो.
9. दूसरे का सामान न चुराएं.
10. सामुदायिक भाषा (गोअर बोली) और वेशभूषा की रक्षा करें।
11. सभी बड़ों का सम्मान करें और सभी छोटों से प्यार करें।
12. दहेज के खिलाफ लड़ो.
13. लालची, लंपट और स्वार्थी होने से बचें।
14. ज्ञान की तलाश करें, हमेशा एक आज्ञाकारी छात्र और एक कठोर शिक्षार्थी बनें।
15. कमजोर और जरूरतमंद लोगों की मदद करें।
16. प्यासे को पानी पिलाओ और पानी कभी मत बेचो।
17. समुदाय की पहचान की रक्षा करें (गोर बनें, कोर नहीं)।
18. अज्ञान, दरिद्रता और अंधविश्वासों से मुक्ति पायें।
19. जानवरों को मत मारो.
20. वन क्षेत्र से दूर न रहें. मुख्यधारा के कस्बों और शहरों से दूर रहें।
21. साफ–सफाई बनाये रखें.
22. सतीभवानी की पूजा करें.

समण सन्त सेवालाल अपने शबद में संदेश देते थे कि–

1. जांणजो – छांणजो – पपच मांणजो गोर बोली

हिंदी – किसी बात को पहले जानो, उसका अध्ययन करो, परिक्षण करो फिर उसे अपनाओ.

2. कोई केती मोठो छेई,
   कोई केती नानक्या छेई,
   केनी भजो मत,
   केनी पुजो मत,
   धुजो मत,
   पुजा पाठमें वेळ घाले पेक्षा
   करणी करेर शिको

हिंदी – कोई किसी से बड़ा नहीं कोई किसी से छोटा नहीं सब समान है। किसी के नाम का जप मत करो, किसी की पुजा मत करो, किसी से डरो मत, पुजा पाठ में वक्त बरबाद करने के बजाय कष्ट करो, कर्म करो।

3. जे छाती करीय वोर साथ रियुँ, जे हाय नाकीय वोर ढेर पडीय

हिंदी – जो हिम्मत करेगा उसी की जित होगी जो डर जायेगा उसकी हार होगी।

4. मुही मठ्ठी सर्जीत वीय केसुला नवी गोर मोरीय कोर – गोरुर राज आय

   हिंदी – मुल निवासियों का दफनाया हुआ इतिहास जिंदा होगा। उदारू हडप्पा, मोहनजोदडो जीन लोगों को भारत की समाज व्यवस्था ने नकारा है वो पलास के फलो की तरह धुप मैं भी खिलेगे और एक दिन एक देश में बहुजनों का राजपाठ आयेगा। बहुजनों का इतिहास उजागर होगा। उदा महात्मा फुले, डॉ. आंबेडकर

5. घर घर नायक वीय,
चोरर घर घी रेडो रेडी हिंदय,
बोडीर सासु सामळीय कोणी,
याडीर बेटा सामळीय कोणी,
याडी न बेटा भारी बेजाय

हिंदी – शिक्षीत नकारार्थी लोगों का प्रमाण बड़ेगा, नितिहीन लोगों का राजपाठ आयेगा। चोरों को सम्मान मिलेगा, नितीहीन लोगों के पास पैसा रहेगा, सामाजिक मुल्यों का नाश होगा। माँ अपने बच्चों की परवरिश की जिम्मेदारी से भागेगी, जिम्मेदारी नहीं निभायेंगी तो फिर सास और बहु के बारे में क्या कहना।

6. निसर्ग सो कोसप दीवा रीय,
रपया कटोरो पाणी वकजाय,
गावडीर शिंग सोनो वेजाय,
रपयाम बार चणा वकीय,
मलेकर खबर पलकेम कळीय,
बना बळदेय गाडी धासीय

हिंदी – दुनिया में पानी को बहुत महत्व प्राप्त होगा और रुपयों से पानी बिकेगा। उदा. मिनिरल वॉटर। गौधन का विनाश होगा, सोने की किमत में गाय का सिंग बिकेगा, दुनिया विनाश की ओर बढ़ेगी और मानव जाती का अस्तित्व मुश्लिक में आयेगा और 50 कि.मी. अंतराल पर दीया दिखेगा महंगाई इतनी बढ़ेगी की 1 रुपयें में 12 चने भी नहीं आयेंगे। दुनिया इतनी तरक्की करेगी की पलक झपकते ही उसे 1000 कि.मी. दुर की बात समझेगी और दिखेगी। बैलगाडी का जमाना खत्म होगा। उपरी सेवालाल के बोल के अनुसार हम ये कह सकते है की, सेवालाल बहुत बड़े विचारक थे। सेवालाल की हर बात पर हमें गौर करना चाहिए, तभी मानवता का विकास होगा आखिर में वो कहते हैं।

'सत्य धर्म लिणता ती रेणुर, भवसागर पार करलेणु' (गोर बोली)

हिंदी – सत्य धर्म और लिनता से हर आदमी को रहना चाहिए, तो ही उसका भला हो सकता है और उसकी जिंदगी सफल हो सकती है।

यह समण सन्तों की परम्परा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि डाले तो श्री लक्खीशाह बंजारा बाबा लक्खीशाह बनजारा जी रायसिना दिल्ली के रहने वाले थे। उनका जन्म 15 अगस्त 1580 संवत सावन वदी अष्टमी 1637 को पिता गोधू ठाकर व माता कंतो के घर हूआ था। बाबा जी के दस लड़के व एक लड़की थी। बाबा जी बहुत बड़े व्यापारी थे। उनका व्यापार विदेशो के साथ भी चलता था। बाबा जी जहाँ भी व्यापार करने के उदेशय से जाते थे वहाँ ही सैंकड़ों एकड़ ज़मीन ख़रीदकर आपने विश्राम के लिये सरांये, तलाव व कुवो का निर्माण करवाते थे, ऐसा एक स्थान पंजाब मे गाँव सरांए बनजारा है। आनंदपुर साहिब शहर की तमाम ज़मीन बाबा लखीशाह बनजारा एवंम मक्खन शाह लबाना जी ने ख़रीद कर गुरू तेग़ बहादुर जी को भेंट की थी। जब गुरू गोबिंद सिंह साहिब जी ने गुरुद्वारा माल टेकरी नांदेड साहिब के पास सिखों को तनख़्वाह दी थी उस समय बाबा लक्खीशाह बनजारा जी के पोते ने सौ खच्चर मोहरे दी थी। 11–11–1675 को औरंगजेब बादशाह ने श्री गुरू तेग़ बहादुर साहिब को शहिद करवा दीया था और बाबा लक्खीशाह बनजारा जी ने आपने बड़े बेटे नगाहीया को साथ ले कर गुरू जी की देह को चाँदनी चौंक से उठा कर अपने घर ले जा कर घर को आग लगा कर गुरू जी के धड़ का अंतिम संस्कार किया था। बाबा लक्खीशाह बनजारा जी ने अपने जिस घर को आग लगायी थी उस जगह पर वर्तमान में दिल्ली में संसद भवन के पास रकिब्गंज गुरुद्वारा बना हुआ है! बाबा जी 10 जून 1680 को वीरगति को प्राप्त कर गए संग उनके तीन बेटे गुरू गोबिन्द सिंह जी के साथ मुग़लों से लड़ते लड़ते शहीद हुए थे।

श्री रूपसिंहजी महाराज तेरहवी शताब्दी में अमरकोट (वर्तमान में पाकिस्तान) से श्री रूपसिंह महाराज के पूर्वज गोपा नायक आये थे वह राजपूत वंश से थे। गोपा अपने भाई पछाण के साथ दिल्ली के बादशाह की शाही सेना में सैनिक थे। यह दोनों भाई गोड़ (सोड़ावत) जाति के राजपूत थे। इनके वंश में पछाण का नाहर, नाहर का वीरम, वीरम का रामसिंह और रामसिंह के आसोसिंह, आसोसिंह के रूपसिंह व सूरजमल हुये। रूपसिंह के चार लड़के गोविन्द, गोपाल, धनराज और मोकुल हुये तथा सूरजमल के एक पुत्र धनराज हुआ। आसोसिंह के पुत्र रूपसिंह बड़े हि निर्भीक, साहसी, स्वाभिमान प्रेमी एवं अपनी स्वतंत्रता में रहने के आदि थे। वो किसी की दासता स्वीकार नहीं करना चाहते थे अपने अडिग स्वाभाव, खानाबदोश जीवन और सामाजिक अवमानना के कारण उनका अपने वंश एवं कुल से सम्बन्ध विच्छेद हो गया और ये नाहर–मगर के जंगल में रहने लगे है। इस कारण विवाह आदि के समाधान हेतु रूपसिंहजी ने एक नविन समाज की स्थापना करने का विचार किया इन्होंने अपने सहयोगी भाईयो ओगलिया, सुरवात, बगाड़ा को एकत्रित किया व अपनी जाति बदलकर गरासिया हो गये। तीन जातियों ने इनका साथ दिया कछावा जहां रूपसिंह का ससुराल था, चावड़ा जहां रूपसिंह का ननिहाल था, दायमा जो की उनके लड़के मोकुल का ससुराल था इन्होंने मिलकर नई जाति बनायीं जिसे बामनिया भाट की संज्ञा दी। इसमें विभिन्न राजपूत वंशो के बारह गोत्र हैं – गोड़, गरासिया, सुरावत, नाथावत, बगाड़ा, ओगालिया ये छ: गोत्र एक हि कूल के माने जाते है ये परस्पर अपने को भाई मानते है। श्री रूपा नायक नाहर–मगरा के जंगल में रहते थे उस समय उदयपुर दरबार महाराजा अड़सी शिकार खेलने आये। दरबार को प्यास लगी, सैनिक पानी खोजने लगे इस दोरान उनको रूपसिंह का डेरा मिला। दरबार ने पानी पिलाने के बदले में रूपसिंह की निर्भयता, वीरता से प्रभावित होकर 12 गाव व 11000 बीघा जमीन जागीर में दे दी और रूपसिंह बामनिया में रहने लगे। सभी जागीरदारों को दरबार के यहाँ हाजरी देने जाना पड़ता था लेकिन रूपसिंह को किसी की दासता पसंद नहीं थी। महाराणा ने रूपसिंह को ख़त्म करने के लिये मारवाड़ परगना के एकलमल जिसने मेवाड़ में लुट–पाट मचा राखी थी, को षड़यंत्र पूर्वक दोनों में युद्ध करवाने की ठानी और रूपसिंह को बुलावा भेजा। जब रूपसिंह महाराणा के दरबार में गए तो द्वारपाल ने गेट खोला तब रूपसिंह महाराज जो की गुरु धनराज पंड्या के भगत थे और लाला सती का स्मरण किया और घोड़े को एड़ लगायी। घोडा कूदकर दरबार में प्रवेश हो गया। रूपसिंह ने राजा के अनुसार एकलमल को मारा। एकलमल की पत्नीं रूपसिंह को श्राप देने लगी तब रूपसिंह ने उन्हें रोका और रोकने पर वह कहने लगी उसे पत्नीं के रूप में स्वीकार करे। रूपसिंह ने श्राप से डरकर उसे पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया। गुरु धनराज पंड्या का पूरा किस्सा सुनाया और गुरु ने कहा कि तुमने पाप किया हे और पाप का प्रायश्चित करने के लिये चारनाथ भुजा का शिखर बनाओ तथा गायों के पीने के पानी के लिये तालाब का निर्माण कराओ। तब रूपसिंह ने चार भुजा का मंदिर बनाया तथा बामनिया के आसपास सात तालाब खुदवाए। श्री समण सन्त रूपसिंह महाराज को एकलमल के मामा मंगलिया ने औरत के वैश में आकर कटार मार दी और कमरबंद खोलने के दोरान वह वीर गति को प्राप्त हो गए।

निष्कर्ष

बंजारा महिलाओ में समाजिक शैक्षणिक उत्थान में समणसंत सेवालाल का योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है। आज भी कर्नाटक के शिवमोगा क्षेत्र के सुरगोंदनकोप्पा में जन्म हुआ था। वहां उन्होनें बंजारा समुदाय के बीच में एक समाज सुधारक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में आज भी माना जाता है। इनकी शिक्षाओं का प्रभाव हर बंजारा परिवार में समणसंत सेवालाल महाराज का बहुत सम्मान करते है। भारत के सभी राज्यों के बंजारा समुदायों में उनके जन्म दिवस 15 फरवरी को बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। महाराष्ट्र के वाशिम जिले के मनोरा

तालुका में तो पोहरादेवी जिसे बंजारा काशी के नाम से भी जानते है वहां उनकी समाधि स्थल स्थित है। समणसंत सेवालाल महाराज बंजारा समुदाय में महान समाज सुधारक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में बंजारा समुदाय के हृदय में पूजनीय हैं। वर्तमान परिदृश्य में उन्हें विशेष रूप से वनवासियों और खानाबदोश जनजातियों की मदद करने के लिए जो उन्होंने वहां लदेडिया मंडली के साथ पूरे देश की यात्रा की वह बंजारा समुदाय में ऐतिहासिक क्षणों के रूप में याद किया जाता है। उस समय वे आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा में, जो ज्ञान विज्ञान से बंजारा समुदाय में उत्थान किया वह एक महान उद्धारक के रूप में ज्ञानमार्ग के रूप में सदआचरण के कुशल कौशल और आध्यात्मिक दृष्टि से समाज में विद्यमान कुरूतियां आवधारणाओं की गलतफहमी और अंधविश्वासों का खंडन किया था। आज भी बंजारा समुदाय के बारे में एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि बंजारा समुदाय पूरे भारत में फैले कई जातीय समूहों से बना है। जिनमें से अधिकांश दक्षिणी भारतीय राज्यों तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में रहते हैं। उनके बसाहट को तांडा के नाम से जाना जाता है। यह समूह स्थायी रूप से अपने खानाबदोश जीवन शैली को छोड़ कर समणसंत सेवालाल के जीवन दर्शन को आत्मसात कर लिया है। यही कारण है कि बंजारा महिलाओं में शिक्षा का प्रभाव आया है। वर्तमान में देश में बंजारा समुदाय की आबादी 10 से 12 करोड़ लोगों के बीच है। विशेष रूप से वनवासियों और घुमंतू जनजातियों के रूप में उन्होंने अपनी लड्डीया मंडली के साथ पूरे देश की यात्रा करते है। उनकी प्रमुख बोलियों में शास्त्रिय भाषा पाली का प्रभाव गोर बोली में झलक मिलती है यह भाषा परिवार में बंजारा समूह की भाषा लम्बाडी के नाम भी जाना आता है। लंबाडी के लिए देवनागरी स्क्रिप्ट के रूप में प्रयोग में लायी जाती है। बंजारा समुदाय के रीति रिवाज परंपरा तीज त्यौहार में भाषा संस्कृति में समण परंपरा की झलक दिखाई पड़ती है। यह प्रभाव समणसंत सेवालाल जीवन दर्शन से बांधे रखी है। इसके लिए बंजारा इतिहास में समण परंपरा के संत समणसंत सेवालाल को युग युगांतर तक याद किया जायेगा।

संन्दर्भ सूची

1. भंडवलकर, वी. (2012, नवंबर)। खानाबदोश और विमुक्त जनजातियाँ।
2. माने, एल. (1980). उपरा. मुंबईः ग्रंथाली प्रकाशन.
3. मोहन, एन.एस. (1988). भारत में बंजारा महिलाओं की स्थितिः कर्नाटक का एक अध्ययन. उप्पल पब्लिशिंग हाउस.
4. नाइक, बी.एस. (1983). आंध्र प्रदेश के बंजारा (लम्बाडी) समुदाय में बदलाव में महिलाओं की स्थिति और भूमिका. भारतीय मानवविज्ञानी.
5. नाइक, आर. (1983). बंजारा जामातिची समाजवादी सामाजिक आर्थिक पाहानी। औरंगाबाद.
6. नाइक, वी.एस. (1996). जन्म से लेकर विवाह के माध्यम से वैवाहिक घर तकः आंध्र प्रदेश में लम्बाडी (बंजारा) महिलाओं का पारंपरिक जीवन चक्र। भारतीय मानवविज्ञानी, 28–29.
7. पवार, ए., नाइक, पीए, और राठौड़, एसजे (2012)। पिछले शोध के साहित्य का संक्षिप्त अवलोकनः भारत में बंजारा समुदाय। वैश्विक शोध विश्लेषण, 101–102।
8. प्रेस सूचना ब्यूरो। (2015)। विमुक्त, घुमंतू और अर्ध–घुमंतू जनजातियों के लिए राष्ट्रीय आयोग। नई दिल्लीः सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार।
9. राठौड़, के. (1978). बंजारा समाजच्य आर्थिक समस्याः एक दृष्टिक्षेप।
10. राठौड़, एम. (2000). विमुक्त और घुमंतू अधिकार कार्य समूह समाचार पत्र। वडोदरा, भारतः विमुक्त और घुमंतू अधिकार कार्य समूह।
11. राठौड़, एम. (2001). गोर बंजारों का प्राचीन इतिहास। बंजारा टाइम्स से लिया गयाः www.Banjaratimes.com
12. राठौड़, एम. (2003). गोर–बंजारा जन जाति का इतिहास। कानपुरः विद्या प्रकाशन.
13. राठौड़, टी. (2008)। कर्नाटक में बंजारा समुदाय के सामाजिक–आर्थिक मुद्देः विकास के लिए पुनर्परिभाषित रणनीति। बंजारा समुदाय की वर्तमान स्थिति और भविष्य की चुनौतियाँ। धारवाड़, कर्नाटक।
14. रेनके, बी. (2008). विमुक्त, घुमंतू और अर्ध–घुमंतू जनजातियों के लिए राष्ट्रीय आयोग. नई दिल्लीः सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार.
15. परमार जबरसिंह (2013)' म.प्र दिग्दर्षन, भोगोलिक परिवेष, अर्थव्यवस्था, कला एवं संस्कृति
16. राठौड़, मोतिराज, (2003) गौर बंजारा जनजाति का इतिहास, विद्याप्रकाषन सी–499 गुजयानी कानपूर 208022।
17. सिंह के.एस.(1999) द शेड्यूल कास्ट 123–134।
18. नाइक, वाई रूपला, (1998), युग के माध्यम से रंगारंग बंजारा (लंबानी) जनजाति, एसबीसी कानून प्रकाषन, 360/ए कविता इमारतें, 1 मेन रोड़ यषवंतपुर बेंगलौर–560022 कर्नाटक।
19. सिंह के.एस (1994) द शिड्यूल ट्राइब्स
20. प्रिती तनेजा, 1992, अप्रवासी बंजारा आदिवासीयों की दो बस्तियों के बीच तुलनात्मक अध्ययन, स्वास्थ्य व टीकाकरण कार्यक्रम के विषेष संदर्भ में,।
21. देब, पी सी, बाबुराम तथा जोगिंदर लाल,(1987) पंजाब के बाजीगरर्सः एक सामाजिक आर्थिक अध्ययन, मित्तल प्रकाषन, बी–2/19 बी, लॉरेंस रोड़, दिल्ली–110035
22. शर्मा, श्रीराम, (1983), बंजारा समाज, दक्षिण प्रकाषन, हैदराबाद।
23. राठौड़ मोतीराज (1976) बंजारा संस्कृति, औरंगाबाद प्रकाषन महाराष्ट्र।
24. लमानी, एच डी, (1976) कर्नाटक के लंबानी लोकगीतः एक अध्ययन, अप्रकाषित थीसीस, कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़।
25. एरिक, पुष्पलता (1975), बंजारा लोकगीत समूह, षिवाजी विश्वविद्यालय, लोलाहापुर।
26. राठौड़, ए लालकृष्ण, (1971) लंबानी भाषा और साहित्य और राजस्थानी और हिन्दी से उसका संबंध, अप्रकाशित थीसीस कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़।
27. नाइक, रंजीत, (1966) अखिल भारतीय बंजारा सेवक सीबीर, अखिल भारतीय बंजारा सेवक संघ प्रकाशन
28. राठौड़, बलीराम,(1936) बंजारा इतिहास, सुबोध पुस्तक प्रकाशक, अमरावती यवतमाल महाराष्ट्र
29. जाधव, काशीराम, आधुनिक बंजारा गीत, बंसत नगर प्रकाशन, महाराष्ट्र
30. सिंह के.एस.(1999)द शेड्यूल कास्ट 123–134।
31. बर्मन, जे जे रॉय (2010)। एक विमुक्त जनजाति की नृवंशविज्ञान लमन बंजारा। मित्तल प्रकाशन। पी। 94. आईएसबीएन 978–8–18324–345–2.
32. नाइक, धनसिंग बी. (2000). बंजारा लम्बानिस की कला और साहित्य: एक सामाजिक–सांस्कृतिक अध्ययन। अभिनव प्रकाशन। आईएसबीएन 978–8–17017–364–9.
33. यशवंत जाधव (2022) बनजारा जाति समाज और संस्कृति वाणी प्रकाशन
34. श्रीराम शर्मा (2019) बनजारा समाज किंडल संस्करण
35. आत्माराम कनीराम राठोड (2019) गोर बंजाराः इतिहास व लोकजीवन, मराठी संस्करण
36. https://samansangh.quora.com/?__pmsg__=+aHE4bEtLX29fY2ctcFV4d1lsakM6YS5hcHAudmlldy5wbXNnLlN1Y2Nlc3M6W1siWW91IGhhdmUgam9pbmVkIHN1Y2Nlc3NmdWxseS4iXSwge31d
37. trijharkhand.in/en/banjara